णमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स
आयओ गुरुबहुमाणो

जैन परंपरा में
भगवान श्रीराम
और
अयोध्यानगरी

प्राचीन जैन शास्त्रों के
मूल उल्लेखों
एवं सरल अनुवाद के साथ

प्रियम्

अहो श्रुतम्
शा बाबुलालजी सरेमलजी
सिद्धाचल बंग्लोझ, हीरा जैन सोसायटी, साबरमती,
अमदावाद-३८०००५. मो.९४२६५८५९०४ ahoshrut.bs@gmail.com
मृगशीर्ष, वि.सं.२०७८
डिसेम्बर, २०२१

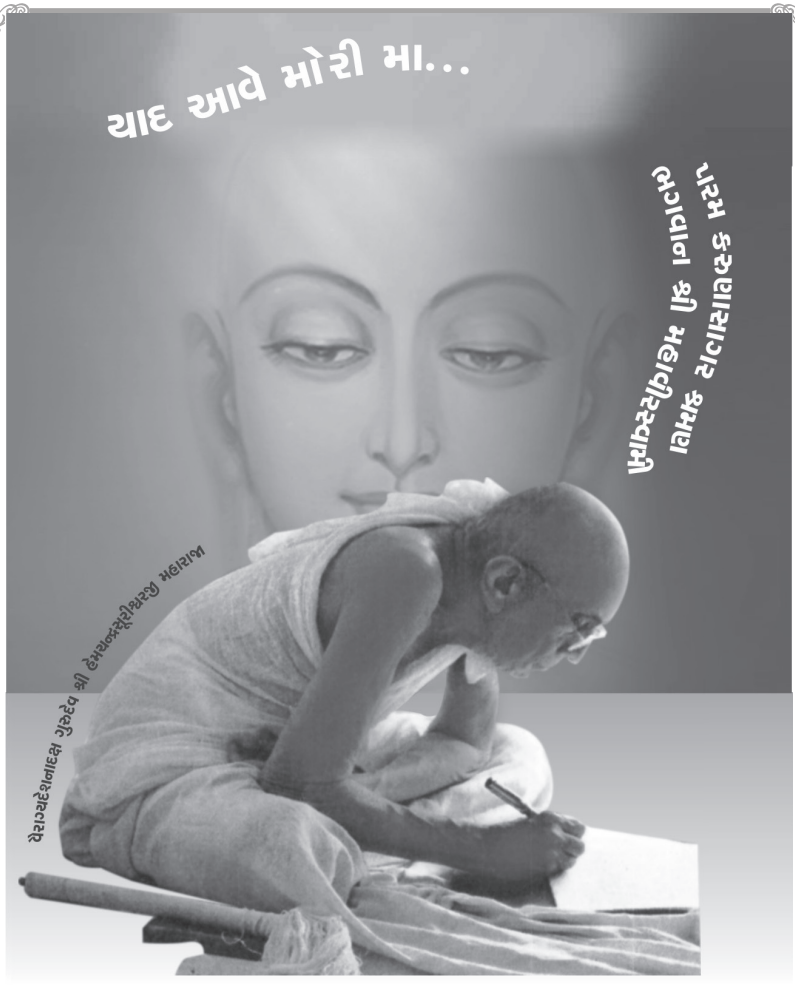

બાળક ખુદ મા-ની ચોપડી હતું. જીવતી ચોપડી - હસ્તલિખિત ચોપડી - જેને મા-એ પોતાના લોહીની શાહીથી લખી, ઉજાગરા પણ કરીને લખી, માંદગીમાં ય લખી, નબળાઈમાં ય લખી, ને સો કામ મુકીને ય લખી. મા-ના શબ્દો, મા-ની શૈલી, મા-ની અક્ષરમરોડની કળા, મા-નું માધુર્ય, મા-ની પ્રસ્તુતિ -- બધું જ લા-જવાબ. છતાં કાગળ હલકો હતો એટલે જોઈએ એવો ઉઠાવ ન આવ્યો. પણ લોકોને કશી ખબર નથી એટલે તેઓ એમ કહે, કે આથી વધુ ઉઠાવ તો શું હોઈ શકે ? બાળકને તો ખબર છે, એટલે ૧૦૦% માને છે કે આપણો ઉઠાવ તો રદ્દીની સાથે કિલોબંધ વેંચાવા જેટલો છે. છતાં આપણે વેંચાવાની બદલે વંચાઈ રહ્યા છીએ એમાં કારણ ફક્ત એ મા-ની હસ્તકળા અને હૈયાકળા છે.

जैन परंपरा में
भगवान श्रीराम
और
अयोध्यानगरी

भगवान श्री राम समस्त प्राचीन भारतीय धर्मों के इष्टदेवता है इसमें कोई संदेह नहीं । जैन धर्म में भी भगवान श्रीराम को परम आदर दिया गया है । त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र, चउप्पन्नमहापुरिसचरित्र, पउमचरिय, जैनरामायण आदि अनेकानेक प्राचीन-प्राचीनतर-प्राचीनतम ग्रंथों में जैनाचार्यों ने परम भक्ति भाव के साथ भगवान श्रीराम के चरित्र का वर्णन किया है । श्रीराम और श्रीलक्ष्मण के जिन गुणों का जैनाचार्योने वर्णन किया है, वे वास्तव में अत्यंत ही अद्‌भुत है । इतना ही नहीं सीताजी के विशुद्ध शील के लिये जैनाचार्यों ने अनेक चरित्रों की रचना करके अनुपम गुणगान किये है ।

जैनाचार्य, जैन श्रमण-श्रमणी भगवंत और जैन गृहस्थ प्रतिदिनः प्रातः एवं शाम को प्रतिक्रमण की परम पावन क्रिया करते है । उस में प्रातः प्रतिक्रमण में अवश्य महासती सीताजी का नाम लिया जाता है । प्राकृतभाषामय सूत्र के पद है -

नमयासुंदरी *सीया* नंदा..

सूत्र के अंत में कहा गया है -

इच्चाइ महासईओ जयंति अकलंकसीलकलियाओ ।
अज्ज वि वज्जइ जासिं, जसपडहो तिहुयणे सयले ।।

ऐसी ऐसी महासतीयाँ जिन्होंने अकलंक शील का पालन किया,

वे विजयवंती है, आज भी समस्त विश्व में उनके यश के बाजे बज रहे है ।

अनेक जैनाचार्यों ने अर्वाचीन भाषाओं में भी रामायण का सृजन किया है । गुजराती, हिंदी, इंग्लीश जैसी विभिन्न भाषाओं में जैनाचार्यों ने मनभावन शैली में लिखे हुए रामायण बडे चाव से पढे चाते है। गुजरात की सब से लम्बी किताब - जो जायन्ट होने के साथ जनता के लिये सुलभ भी है, शायद भारत की भी वह सब से लम्बी किताह है - वह है जैन रामायण । जो प्रवचनशैली में लिखी गयी है और कथा के साथ महत्त्वपूर्ण जीवनसंदेश भी देती है । आज तक हज़ारों लोग इस किताब को बहुत ही दिलचस्पी से पढ़ चूके है ।

जैनाचार्यों नियमित रूप से रामायण पर प्रवचन देते रहते है। चाहे आप कितनी भी बार रामायण सुन चूके हो, तथापि उनके प्रवचन में आपको भगवान श्रीराम की नयी ही गुणमहिमा एवं नया ही जीवनसंदेश सुनने का सौभाग्य प्राप्त होगा ।

जैन शास्त्रों में श्रीराम स्पष्टरूप से भगवान घोषित किये गये है, एवं उन्होंने जीवन के अंतिम समय में गुजरात-सौराष्ट्र में शत्रुंजय नाम के परम पवित्र पर्वत पर साधना की थी एवं वहाँ से मोक्ष प्राप्त किया था, ऐसा उल्लेख किया गया है । आज भी शत्रुंजय पर्वत पर भगवान श्रीराम की प्रतिमा बिराजित है । जिन्हें तीर्थयात्रिक भक्तिपूर्ण नमस्कार करते है ।

जैन शास्त्रों के अनुसार अयोध्या एक ऐतिहासिक और पवित्र नगरी है, जिसका पूर्व नाम विनीता नगरी था । इस नगरी में पहले राजा श्रीऋषभदेव भगवान हुए । जो जैन परंपरा में इस काल के

चौबीस तीर्थंकरों में प्रथम तीर्थंकर थे । वैदिक परंपरा में श्रीऋषभदेव भगवान का उल्लेख वेदों एवं पुराणों में पाया जाता है । एक जैन तीर्थंकर के संक्षिप्त चरित्र एवं अद्‌भुत गुणों की बात करनी यह वैदिक परंपरा के अत्यंत गुणानुराग का सूचक तो है ही, साथ साथ वैदिक परंपरा के प्राचीनतम ऋषि-मुनिओं को भी भगवान श्रीऋषभदेव पर कितनी आस्था होगी उसका परिचायक भी है । भगवान श्रीऋषभदेव प्रथम तीर्थंकर थे, अतः उनका दुसरा नाम भगवान श्रीआदिनाथ भी है । पुराणों में कहा गया है -

अष्टषष्टिषु तीर्थेषु, यत्फलं किल यात्रया ।
आदिनाथस्य देवस्य, स्मरणेनापि तद् भवेत् ।।

अडसठ तीर्थों में यात्रा करने से
जो पुण्य मिलता है
वह पुण्य श्रीआदिनाथ देव के स्मरण से भी मिलता है ।

वैदिक परंपरा में पुराणों में यह भी कहा गया है कि -

कैलासे पर्वते रम्ये ऋषभोऽयं जिनेश्वरः ।
चकार स्वावतारं च सर्वज्ञः सर्वगः शिवः ।।

श्रीऋषभदेव भगवानने जब राज्यत्याग किया और दीक्षा लेकर साधना करनी शुरू की, तब विनीतानगरी के राजसिंहासन पर उनके प्रथम पुत्र भरत बिराजमान हुए । उनका नाम भी पुराणों में प्राप्त होता है, जैसे कि -

ऋषभाद् भरतो जज्ञे ० भरताद् भारतं वर्षम् ।

श्रीऋषभदेव भगवान से भरत का जन्म हुआ ।
भरत के नाम से इस देश का नाम
'भारत' रखा गया ।

भरत महाराज भी एक दिन पिता की तरह राज्यत्याग करके दीक्षा लेकर मोक्ष को प्राप्त हुए । स्वयं भगवान बने । उनके बाद उनका पुत्र राजा बना । इस तरह विनीतानगरी स्वरूप प्राचीन अयोध्या नगरी में श्रीऋषभदेव भगवान के वंश के असंख्य राजाओं ने न्यायपूर्ण राज्य किया एवं सभीने आत्मकल्याण भी किया । फिर हुए दुसरे तीर्थंकर श्रीअजितनाथ भगवान उनके समय पूर्व ही इस नगरी का नाम अयोध्या हो चूका था, यतः कोइ भी उस नगरी के साथ युद्ध नहीं कर पाता था । इसके हेतु श्री जैन शास्त्रों में दिये गये है, जो इसी लेख में आगे दृष्टिगोचर होंगे ।

चौथे तीर्थंकर श्रीअभिनंदनस्वामी, पाँचवे तीर्थंकर श्रीसुमतिनाथ भी इसी अयोध्यानगरी के राजा थे । यही उनका जन्म हुआ था । यही उन्होंने दीक्षा ली थी और यही उन्हें केवलज्ञानस्वरूप सर्वज्ञता प्राप्त हुइ थी । उनके पूर्वज व वंशज भी इस अयोध्यानगरी में न्यायी राजा थे ।

श्रीऋषभदेव का कुल इक्ष्वाकू था । इस काल के २४ तीर्थंकरों में से २२ तीर्थंकरों का कुल इक्ष्वाकू था । इक्ष्वाकूओं की राजधानी अयोध्या थी । राजा दशरथ भी इक्ष्वाकू थे – ऐसा जैन रामायण में उल्लेख है –

एवं ध्यात्वाऽ**योध्याया**मागतो दशरथ **ईक्ष्वाकूणां राजधानी**ति मत्वा।

अतः प्राचीनतम समय से अयोध्या जैनों की भी तीर्थभूमि बनी रही है । आज भी अयोध्या में प्राचीन जिनालय में प्राचीन जिनप्रतिमाओं की श्रद्धापूर्ण अर्चना हो रही है एवं अनेक तीर्थंकर भगवंतों एवं भगवान श्रीराम के चरणों से पावन बनी हुई इस वसुंधरा की मिट्टी को जैन भक्त गण आस्था के साथ वंदन करते है ।

लिखा है जैन रामायण में –

''सुवर्णवर्णं, सम्पूर्णलक्षणं, पुण्डरीकाक्षं मातृपितृप्रमोददं''

भगवान श्रीराम के शरीर का वर्ण था सुवर्ण जैसा, वे सम्पूर्ण लक्षणों से युक्त थे, कमल जैसे उनकी आँखे थी । वे माता–पिता को आनन्द देते थे ।

द्वावपि कथंभूतौ ? नीलपीताम्बरौ, महीतलं पादघातैः कम्पयन्तौ। साक्षिकृतकलाचार्यौ, गिरिरिव महोजसौ, सकलाः कलाः शिक्षमाणौ द्वात्रिंशल्लक्षणोपेतौ ।

श्रीराम और श्रीलक्ष्मण कैसे थे ? उन्होंने क्रमशः नील और पीत वर्ण के वस्त्र पहने हुए थे । वे अपने चरण के प्रहार से धरती को कँपा रहे थे । उनके कलागुरु केवल साक्षी ही थे, उन्होंने अपनी अद्‌भुत प्रतिभा से ही कलायें सीखी थी । वे पर्वत जैसे अत्यंत बलवान थे । उन्होंने सभी कलाओं को सीख ली थी । वे बत्तीस लक्षण से युक्त थे ।

षट्त्रिंशद्दण्डायुधज्ञौ महायोधौ सकलशस्त्रशास्त्रपारीणौ राज्ञो दशरथस्वाभिनवो भुजाविव वर्द्धितौ ।

वे छत्तीस प्रकार के दंड–शस्त्रों के जानकार, महान योद्धा और सकलशस्त्रशास्त्रों के परिगामी थे । वे दशरथ राजा के दाये व बांये हाथ जैसे बड़े हुए थे ।

पद्मानिवासपद्मस्य पद्म इत्यभिधां नृपः सूनोस्तस्याकरोत्सोऽभूत् प्रथितो राम इत्यपि ।

वे लक्ष्मी के निवास पद्म–स्वरूप थे, राजा दशरथने उनका नाम रखा पद्म । वे 'राम' इस नाम से प्रसिद्ध हुए ।

पउमो पउमुप्पलदलच्छो – (पउमचरियं)

श्रीराम कमल जैसे सुंदर थे ।

रामो, लद्धजसो – (पउमचरियं)

श्रीरामने उज्ज्वल यश प्राप्त किया था ।

रामसासण गया, विज्जाहरपत्थिवा महिड्ढिया – (पउमचरियं)

महती ऋद्धिवाले विद्याधर राजा श्रीराम के आज्ञांकित बने थे ।

विमलकित्तिधरा पुरिसोत्तमा – (पउमचरियं)

श्रीराम और श्रीलक्ष्मण उत्तम पुरुष थे, निर्मल कीर्ति के धारक थे ।

रामस्स धीरविमलस्स – (पउमचरियं)

श्रीराम धीर और निर्मल थे ।

रामो तिसमुद्दमेइणीनाहो । – (पउमचरियं)

श्रीराम समस्त धरती के स्वामी थे ।

रामेणं बुद्धिमन्तेणं – (पउमचरियं)

श्रीराम अत्यंत बुद्धिमान थे ।

पउम ! बहुगुणायर ! – (पउमचरियं)

श्रीराम अनेक गुणों के सागर थे ।

ऊसियसियायवत्तो, सललियधुव्वन्तचामराजुयलो ।
परिवारिओ भडेहिं नज्जइ इन्दो व्व देवेहिं ।। – (पउमचरियं)

श्रीराम के उपर श्वेत छत्र है । उनके दोनों बाजू चामरों से पवन डाला जा रहा है । जैसे देवों के बीच इन्द्र शोभायमान होते है । उस तरह सुभटों के बीच श्रीराम शोभायमान है ।

पिउणो पडिच्छिऊणं आएसमणाउलो पहट्ठमणो ।
सविणयलक्खणसहिओ रण्णम्मि गओ सभज्जाओ ।। – (पउमचरियं)

श्रीरामने पिता के आदेश का स्वीकार किया उनमें आकुलता नहीं थी, पर आनंद था । सविनय पत्नी के साथ वन में गये ।

अउज्झाणाम णयरी । विविहवण्णरयणोहभवणुज्जला, सप्पुरिसहियय व्व तुंगपायारोववेया, महिलामणाण वऽगाहखाइयावरिया –

(चउपन्नमहापुरिसचरियं)

अयोध्या नाम की नगरी विविध वर्ण के रत्नों के समूह से बने हुए भवनों से उज्ज्वल है । सज्जनों के हृदय जैसे बड़े किल्ले से युक्त है और महिलाओं के मन के जैसी गंभीर खातिकावाली है ।

भणिओ य मुणिवरेणं, राम ! इमं मुयसु सोयसंबन्धं ।
अवसेण भुञ्जियव्वा, बलदेवसिरी तुमे विउला ।। – (पउमचरियं)

मुनिवरने श्रीराम को कहा – हे राम ! आप इस शोक को छोड दे । अभी आप विस्तृत बलदेवस्मृद्धि का उपभोग करोगे ।

भोत्तूण उत्तमसुहं, इह मणुयभवे सुरिन्दसमसरिसं ।
सामण्णसुद्धकरणो, केवलनाणं पि पाविहिसि ।। – (पउमचरियं)

इस मनुष्यभव में ऐसे सुरेन्द्र जैसे उत्तम सुख को भोग कर शुद्ध संयम का पालन करके केवलज्ञान की भी प्राप्ति करोगे ।

एयं केवलिभणियं, सोउं हरिसाइओ य रोमञ्चइओ ।
जाओ सुविमलहियओ, वियसियसयवत्तलोयणो य पउमाभो ।।

– (पउमचरियं)

इस तरह केवलज्ञानी की बात सुनकर श्रीराम को हर्ष हुआ, वे रोमांचित हुए, उनका हृदय अत्यंत विमल बना और उनकी आँखे विकसित कमल जैसी हो गयी ।

एयं राहवचरियं, पुरिओ जो पढइ सुणइ भावियकरणो ।
सो लहइ बोहिलाभं, हवइ य लोयम्मि उत्तमो विमलजसो ।।

– (पउमचरियं)

इस श्रीरामचरित्र को जो अहोभाव एवं प्रणिधान के साथ बोलेगा

व सुनेगा, वह बोधिलाभ को पायेगा और विश्व में वह उत्तम बनेगा, उसका उज्ज्वल यश हर दिशा में फैल जायेगा ।

भारहे वासे अउज्झा णाम णयरी जय–धण–कणगसमिद्धा

– (चउप्पन्नमहापुरिसचरियं)

भारत वर्ष में अयोध्या नाम की नगरी विजय, संपत्ति एवं सोने से समृद्ध थी ।

भारहे वासे अउज्झा णाम णयरी सयलणयरगुणोववेया ।

– (चउप्पन्नमहापुरिसचरियं)

भारत वर्ष में अयोध्या नाम की नगरी सभी नगरगुणों से युक्त थी ।

जैनाचार्य कलिकालसर्वज्ञ श्रीहेमचन्द्राचार्यने त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र में श्रीराम–लक्ष्मणचरित्र इस प्रकार कहते है –

अयाऽपराजिताऽन्येद्युर्गजसिंहेन्दुभास्कारान् ।
स्वप्नेऽपरयन्निशाशेषे बलजन्माभिसूचकान् ।। १७५ ।।

अचिन्तितोपनीतानि प्राभृतानि महीभृताम् ।
तदा राज्ञे समाजम्मुस्तस्य सूनोः प्रभावतः ।। १८३ ।।

पद्मानिवाससद्मस्य पद्म इत्यभिद्यां नृपः ।
सूनोस्तस्याऽकरोत् सोऽभूत्प्रथितो राम इत्यपि ।। १८४ ।।

राजसिंहार्कचन्द्राग्निश्रीसमुद्रान्निशात्यये ।
स्वप्नेऽपश्यत् सुमित्राऽपि विष्णूजन्माभिसूचकान् ।। १८५ ।।

नामनारायण इति विदधे तस्य पार्थिवः ।
स लक्ष्मण इति ख्यातोऽपरनाम्ना च भुव्यभूत् ।। १९२ ।।

लीलामुष्टिप्रहारेण हिमकर्परलीलया ।
दलयामासतुस्तौ च गिरीनपि महौजसौ ।। १९८ ।।

श्रमस्थानेऽपि हि तयोरधिज्यीकृतचापयोः ।
चकम्पे तपनोऽप्युच्चैस्तस्थौ वेधाभिशङ्कया ।। १९९ ।।

तृणायमन्यमानौ तौ दौस्थाम्नाऽपि द्विषां बलम् ।
कौतुकायैव मेनाते शस्त्रकौशलमात्मनः ।। २०० ।।

शास्त्रास्त्रकौशलेनोच्चैर्दौःस्थाम्ना च तयोः नृपः ।
अपि देवासुरादीनां स्वमजय्यममन्यत ।। २०१ ।।

एक दिन अपराजिता (कौशल्या)ने पीछली रात बलदेव के जन्म के सूचक हाथी, सिंह, चन्द्र और सूरज को सपने में देखा ।

राजाओं के बड़े बड़े उपहार दशरथ राजा को मिलने लगे, जिस में प्रभाव था उनके आनेवाले बेटे का (श्रीराम का)। उस बेटे का जन्म हुआ जैसे लक्ष्मी के निवास ही हो ऐसे शोभाशाली । उनका नाम पद्म रखा गया वे 'राम' नाम से भी प्रसिद्ध हुए ।

सुमित्राने भी पीछली रात में हाथी, सिंह, सूरज, चन्द्र, अग्नि, लक्ष्मी और समुद्र – इन को स्वप्न में देखा ।

जो श्रीलक्ष्मण के जन्म को सूचित करता था । राजाने उनका नाम 'नारायण' रखा, वे लक्ष्मण इस नाम से धरती में प्रसिद्ध हुए ।

श्रीराम और श्रीलक्ष्मण दोनों महातेजस्वी थे । वे लीलामात्र से अपनी मुष्टि के प्रहार से पर्वत को भी चूर चूर कर देते थे ।

वे धनुष पर तीर लगाते थे तो सूरज भी डर से काँप जाता था की 'कहीं मुज पर प्रहार न कर दे', इसी लिये सूरज बहुत उपर ही रहता था ।

वे केवल अपने बाहुबल से भी शत्रुसेना को तृणसमान ही समज़ते थे । शस्त्रकुशलता तो उनके लिये केवल एक कुतूहलमात्र था । उन दौनों के शस्त्र एवं अस्त्र के कौशल्य से और उच्च

बाहुबल के प्रभाव से राजा अपने आपको देव और असुरों से भी अजेय मानते थे ।

एतौ (रामराधवौ) सत्पुरुषौ परकार्यतत्परौ । – श्रीजैन रामायण

श्रीराम और श्रीलक्ष्मण सत्पुरुष थे, वे परोपकार में परायण थे ।

इमौ दाशरथी रामलक्ष्मणौ नतवत्सलौ । पुरन्दरौ द्विडद्रीणां विश्व-विख्यातविक्रमौ ।। – श्रीजैन रामायण

श्रीराम-लक्ष्मण दशरथ राजा के पुत्र है । जो उन्हें प्रणाम करते है उनके प्रति वे वत्सल रहते है । पर्वत जैसे दुश्मनों को भी वे इन्द्र की तरह चूर चूर कर देते है । उनका पराक्रम समग्र विश्व में प्रसिद्ध है ।

पद्म ! पद्मनयन ! बन्धुपद्मदिवाकर ! – (श्रीजैन रामायण – पृ.३३४)

धीरेष्वपि हि धीरस्त्वं वीरो वीरेष्विव प्रभो ! दिव्यस्वर्णाम्बजासीनो दिव्यचामरराजितः । दिव्यातपत्रवान्नामो विदधे धर्मदेशनाम् ।। – (श्रीजैन रामायण – पृ.३३७)

''हे श्रीराम ! आप की आँखें कमल जैसी है । आप स्नेही जन स्वरूप पद्म को विकसित करनेवाले सूरज हो ।''

''आप धीरों में ठीक वैसे ही धीर हो, जिस तरह वीरों में वीर है ।''

भगवान श्रीराम संयमसाधना से केवलज्ञान प्राप्त कर दिव्य स्वर्णकमल में बिराजमान हुए दिव्य चामर और दिव्य छत्र से शोभने लगे और धर्म का उपदेश देने लगे ।

❀ अयोध्या के आठ (८) नाम ❀

प्राचीन जैन शास्त्र विविधतीर्थकल्प में तेरहवा कल्प है अयोध्या-नगरीकल्प । उसमें अयोध्या के आठ नाम इस प्रकार दीये गये है –

अउज्झा अवज्झा कोसला विणीया
साकेयं इक्खागुभूमी रामपुरी कोसल ।

(१) अयोध्या (२) अवध्या (३) कोशला (४) विनीता
(५) साकेत (६) इक्ष्वाकुभूमि (७) रामपुरी (८) कोशल

पावनभूमि - अयोध्या

यह किन किन महापुरुषों की भूमि है इस के बारे में यह शास्त्र कहता है –

एसा सिरिउसभ–अजिअ–अभिनंदण–सुमइ–
अणंतजिणाणं तहा नवमस्स
सिरिवीरगणहरस्स अयलभाउणो जम्मभूमी ।
रहुवंशुब्भवाणं दसरह–राम–भरहाईणं च रज्जट्ठाणं ।
विमलवाहणाइसत्तकुलगरा इत्थ उप्पन्ना ।

यह अयोध्या नगरी
श्रीऋषभ–अजित–अभिनंदन–सुमति–अनंत जिनेश्वरों की
जन्मभूमि है
श्रीमहावीरस्वामी के नव वे गणधर अचलभ्राताजी की भी
यह जन्मभूमि है ।
रघुवंश में जिन्होंने जन्म लिया
ऐसे श्रीदशरथ–श्रीराम–श्रीभरत आदि का
यह राज्यस्थान है ।

श्रीऋषभदेव के पूर्वज विमलवाहन आदि सात
कुलकरों ने भी यही जन्म लिया था ।

शीलमहिमाभूमि अयोध्या

प्राचीन जैन शास्त्र विविधतीर्थकल्प में लिखा है ।
जत्थ य महासईए सीयाए अप्पाणं सोहंतीए
निअसीलबलेण अग्गी जलपूरीकओ ।
सो अ जलपूरो नयरिं बोलिंतो निअमाहप्पेण
तीए चेव रक्खिओ ।

इसी अयोध्या नगरी में
महासती सीताजी ने अपने आप को शुद्ध
साबित करते हुए
अपने शील के बल से
अग्नि को पानी की बाढ़ में परिवर्तित कर दिया ।
वह पानी की बाढ़ नगरी को डुबाने लगी
तब सीताजीने ही अपने माहात्म्य से
अयोध्या की रक्षा की ।

और क्याँ था अयोध्या में ?

प्राचीन जैन शास्त्र विविधतीर्थकल्प में और भी कुछ उल्लेख मिलते है जिस से अयोध्यानगरी में और क्याँ क्याँ था उसकी इस प्रकार जानकारी मिलती है । यह सब ग्रंथकार के समय में मोजूद था ।

(१) रत्नमय मंदिर में श्रीऋषभदेव की सेविका देवी चक्रेश्वरी, जो संघविघ्न को दूर करती है ।

(२) रत्नमय मंदिर में श्रीऋषभदेव के सेवक देव गोमुख यक्ष, जो संघविघ्न को दूर करते है ।

(३) **घर्घरह्रद (घाघरा घाट) सरयू नदी के साथ मिलकर 'स्वर्गद्वार' के रूप में प्रसिद्ध हुआ है ।**

(४) नगरी से उत्तर दिशा में १२ योजन पर अष्टापद पर्वत है। जहा से श्रीऋषभदेव का मोक्षगमन हुआ। जहा उनके पुत्र भरत चक्रवर्तीने २४ तीर्थंकरों की रत्नमयप्रतिमाओं से युक्त जिनालय बनवाया ।

(५) इस नगरी के लोग अष्टापद पर्वत के पास घुमने जाते थे ।

(६) **इस नगरी में अभी भी श्रीऋषभदेव के पिता श्रीनाभिराजा का निवासस्थान है ।**

(७) इस नगरी में २३वे तीर्थंकर श्रीपार्श्वनाथ की वाटिका है, सीताकुंड है और सहस्रधार है ।

(८) **इस नगरी के किल्ले में मत्तगजेन्द्र नाम के यक्ष(देव) रहते है । आज भी उनके आगे हाथीसेना नहीं चल सकती है । यदि चलने जाये तो मर जाती है ।**

(९) गोप्रतर वगैरह अनेक लौकिक तीर्थ भी यहा है ।

भगवान श्रीराम एवं भगवान श्रीलक्ष्मण के लिये प्राचीनत्तम जैन शास्त्र श्रीसमवायांग आगमसूत्र के अद्‌भुत उद्‌गार

उत्तम पुरिसा – वे थे एक उत्तम पुरुष

तेयंसी – वे थे अत्यंत तेजस्वी

सुरूवा – उनका रूप था अद्‌भुत

सव्वजणणयणकंता – सभी लोग को प्रिय था जिनका दर्शन

महाबला – जिनका बल था अत्यंत महान

रिपुसहस्समाणमथणा – वे अकेले हज़ार दुश्मनों के अभिमान को चूर चूर कर देते थे ।

अमच्छरा – उनको किसी पर भी मत्सर नही था ।

गंभीरमधुरपडिपुण्णसच्चवयणा – वे गंभीर, मधुर, पूर्णसत्य वचन ही बोलते थे ।

अब्भुवगयवच्छला – उन्होंने जिनको स्वीकारा उन पर वात्सल्य बरसाते थे ।

महासत्तसागरा – वे महासत्त्व के सागर थे ।

नरसीहा – वे पुरुषसिंह थे ।

नीलग–पीतगवसणा – वे नील और पीत वस्त्र धारन करते थे ।

कैसी थी नगरी अयोध्या

जैन शास्त्र आख्यानकमणिकोश में कहा है –

जहिं भवणसिहर रविरहु खलंति,
रविकंतभित्ति दिणि पज्जलंति ।
जहिं पउमरायमणि विप्फुरंति
ससिकंत निसिहि जलु पज्झरन्ति ।।

जहाँ भवनो के शिखर इतने ऊँचे है
कि लगता है के वे सूर्य के रथ को रोक रहे है ।
जहाँ महलों की दीवारों में सूर्यकान्त रत्न जडे हुए है
अतः धूप में उनसे ज्वालायें नीकलती है ।
जहाँ पद्मरागमणि लाल प्रकाश फैला रहे है ।
और जहाँ हवेलीओं में जडे हुए चन्द्रकान्त रत्न में से रात की
चांदनी में निर्मल जल का झरना बहता रहता है ।